BA Part II (H)
Paper III

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
(Sociology)

Lecture II

ग्रामीण समुदाय की विशेषताएं →

5) सरल जीवन : ग्रामीण समुदाय के लोगों का जीवन सरल एवं परम्परावादी होता है। वे अपना सम्पूर्ण जीवन सरल एवं सरल तरीके से निर्वाह करते हैं। गांवों में उपलब्ध संसाधनों का ही वे प्रयोग करते हैं। कर्मफल, स्वर्ग और नरक तथा भाग्य सम्बन्धी विश्वासों को मुक्त रूप से मानते हैं। शुभ-अशुभ के विचार ग्रामीणों को प्रभावित करते हैं।

6) प्राथमिक सम्बन्ध – ग्रामीण समुदाय में सभी लोग व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे को जानते हैं। उनके सम्बन्ध पारस्परिक वैयक्तिक होते हैं और स्वार्थ पर आधारित नहीं होते हैं। प्राथमिक सम्बन्धों के द्वारा ही उनके बीच हम की भावना पायी जाती है। फलस्वरूप कृषि कार्यों से लेकर त्योहारों, उत्सव के आयोजन में ग्रामीण लोग एक दूसरे से निकट रूप से जुड़े होते हैं।

7) परम्परागत नियंत्रण – ग्रामीण समुदाय में राज्य और कानूनों का व्यक्ति के व्यवहारों पर उतना प्रभाव

नहीं पड़ता जितना परिवार, धर्म, जाति का प्रभाव पड़ता है। फलस्वरूप गांवों की प्रकृति परम्परावादी होती है।

8) सामाजिक परिवर्तन की धीमी गति ⇒ ग्रामीण समुदाय में सामाजिक परिवर्तन की दर बहुत ही धीमी गति से होता है। अधिकांश व्यक्तियों के सोचने का ढंग परम्परावादी होता है जिसके फलस्वरूप वे सामाजिक परिवर्तन को जल्दी स्वीकार नहीं करना चाहते हैं। वे अपने व्यवसाय और व्यवहार के तरीकों में भी काफी रूढ़िवादी हैं।

9) जजमानी व्यवस्था – ग्रामीण समुदाय की विशेषताओं में जजमानी व्यवस्था मुख्य है। जजमानी व्यवस्था के अंतर्गत कुछ जाति जैसे कुम्हार, नाई, धोबी, बढ़ई, पुरोहित अपनी सेवा जजमान को देते हैं।

10) प्रौद्योगिकी का विकास क्रम ⇒ साधारणतया ग्रामीण लोग उन्हीं प्रौद्योगिकी में रुचि लेते हैं जिनका सम्बन्ध कृषि से होता है। सामान्य ग्रामीण खेती या जीवन के इतर पहलुओं से सम्बन्धित किसी नयी तकनीकी को तब तक स्वीकार नहीं करते जब तक उसकी प्रमाणिकता सिद्ध हो जाए।

अतः स्पष्ट है कि ग्रामीण समुदाय की प्रकृति बहुत कुछ अपरिवर्तनशील होती है।